शोध-सार

संसार की सभी भाषाओं में **‘कहानी’** लिखी और पढ़ी जाती है। जब लिखने का आविष्कार नहीं हुआ था, तभी से कहानी कहने और सुनने की परंपरा विद्यमान थी। कहानी का आरम्भ किस तरह हुआ और विकास करते-करते आज हमारे सामने किस रूप में प्राप्त है? इसी का अध्ययन हमारा उद्देश्य है। पहले की कहानी विशुद्ध कल्पना पर आधारित होती थी, लेकिन आज की कहानी वास्तविकता पर आधारित होती है। अब तो कहानी के सन्दर्भ में कहा जाता है कि जिस कहानी में यथार्थ नहीं है, वह अपनी प्रासंगिकता खो देती है।

भारतवर्ष में कथा-कहानियों का इतिहास सहस्त्रों वर्ष पुराना है। मानव सभ्यता के आदिकाल से ही कहानी कहने की कला अथवा परंपरा किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। अतः विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ ऋग्वेद में यम-यमी संवाद, पुरूरवा उर्वशी आदि संवादात्मक आख्यानों का मिलना स्वाभाविक है। आगे चलकर विभिन्न उपनिषदों, महाकाव्यों, पुराणों एवं जैन, बौद्ध साहित्य के साथ पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियों का प्रचार दूर-दूर तक हुआ। इन कहानियों का विभिन्न भाषाओं में (लैटिन, अरबी जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश और अंग्रेजी) में अनुवाद हुए। इससे विश्व के कथा साहित्य में भारतीय कथाओं की सफल प्रस्तुती दिखाई देती है।

आधुनिक कहानी का आरंभ यूरोप के विभिन्न लेखक समूहों द्वारा 19वीं सदी में हुआ। इन लेखक समूहों में सर्वप्रथम ई.टी. डब्ल्यू हॉफमैन की कहानी संग्रह (1814-1821 ई0) के बीच प्रकाशित हुई, वहीं दूसरी ओर जैकब व व्हिलमैन ग्रिम ने परियों और पुराणों की कथाओं को लेकर इसी काल में अनुवाद कराये, किन्तु ये कहानियाँ अपने रूप में परिपक्व नहीं हैं।

आगे चलकर मोपाशा, चेखव, ओ. हेनरी इत्यादि ने कहानी कला के संवैधानिक और व्यावहारिक रूप का और भी अधिक विकास किया। यूरोप में विकसित इस कहानी का स्वरूप अंग्रेजी और बांग्ला के माध्यम से बींसवी शताब्दी के आरम्भ में हिन्दी साहित्य में प्रवेश किया।

इस लघु शोध-प्रबन्ध का विषय ‘समकालीन ग्रामीण यथार्थ और महेश कटारे की कहानियाँ’ हैं। इस विषय में पहले के गांव से आज के गांव में कितना अन्तर है तथा आने वाले समय विशेष में कितना परिवर्तन हो सकता है? इसका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह विश्लेषण कहानी के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

इसके प्रथम अध्याय में कहानी का आरम्भ, विकास और स्वरूप है, जिसमें कहानी के कहने-सुनने से लेकर लिखने-पढ़ने तक का विकास तथा यह किन-किन परिस्थितियों को पार करते हुए आज हमारे सामने इस रूप में है; इसका विवरण दिया गया है।

दूसरे अध्याय में मुख्यतः कहानियों में गाँव का विवरण है। यह विवरण प्रेमचंद पूर्व की कहानियों में गांव की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति की चर्चा, प्रेमचन्द युगीन कहानियों में गांव की स्थिति की चर्चा एवं प्रेमचन्दोत्तर कहानियों में गांव की चर्चा की गयी है। बदलते-बदलते गांव आज कहाँ तक आ गये हैं तथा इनका विकास किस सीमा तक हो गया है? इस पर विशेष रूप से अध्ययन किया गया है। खासकर गांव के व्यक्तियों की मानसिक दशा का विवेचन है, जिसमें प्रारम्भ के गांव के व्यक्तियों की सोंच तथा आज के गांव के व्यक्तियों की सोंच की तुलना की गयी है।

तीसरा अध्याय महेश कटारे की कहानियाँ और उनका प्रतिपाद्य रखा गया है, जिसमें कहानीकार किन विषयों को लेकर कहानी लिखते हैं तथा उनका उद्देश्य क्या है? इसकी चर्चा की गयी है। ये मूलतः गांवों कीसमस्याओं को ही अपनी कहानियों में वर्णित करते हैं। गांवों में सरपंच का दबदबा पूरे गांव पर रहता है। गांव की किसी सुन्दर युवती पर नज़र तथा किसानों की ज़मीन पर नज़र तथा शोषण की प्रवृत्ति आदि सरपंचों की विशेषताएं हैं। जब भारतवर्ष में सामंती व्यवस्था थी, तब पुरोहितों के द्वारा धर्म का संचालन किया जाता था। सम्पूर्ण गांव के व्यक्तियों को धर्म के बन्धन में जकड़ दिया गया था। सामंतों की इसी प्रवृत्ति को प्रेमचंद ने अपनी कई कहानियों में वर्णित किया है। इसके साथ ही साथ किसान की स्थिति, परिवार की स्थिति, स्त्री की स्थिति आदि का व्यापक वर्णन इनकी कहानियों में हैं। कटारे जी भी अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण किसान की स्थिति, परिवार की स्थिति, स्त्री और बच्चों की स्थिति पर कलम चलाते हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में समाज के सभी पक्षों को लिया है। चाहे वह ग्रामीण परिवेश हो, चाहे वह गांव का राजीनीतिक परिवेश हो, चाहे गांव का धार्मिक परिवेश हो। इन सभी बिन्दुओं पर अपने पात्रों केसंवादों के माध्यम से परिस्थिति का वर्णन किया है। इन्होंने जगह-जगह तीज-त्योहारों तथा परंपराओं का भी उल्लेख किया है।

इस शोध-प्रबन्ध के चौथे अध्याय में महेश कटारे की कहानियों के शिल्प पर बात की गयी है। शिल्प-विधान के अन्तर्गत भाषा-शैली, संवाद तथा पात्रों के चरित्र चित्रण पर विचार किया गया है। अमूमन इन्होंने कहानियों में मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, जिससे कहानी में रोचकता आ गयी है। पात्रों के संवादों में गांव की

देहाती भाषा का इस्तेमाल किया है। इन्होंने अपनी कहानियाँ विवरणात्मक शैली में लिखीं हैं। इनकी कहानियों के पात्रों में स्त्री, बच्चे, नवयुवक तथा प्रौढ़ व्यक्ति शामिल हैं।

गांव का सच वही लिख सकता है, जो गांव में रहकर गांव की परंपरा, संस्कृति, रीति-रिवाज इत्यादि के विकास में योगदान दिया हो। जैसे-जैसे इन चीज़ों का विकास होता है, वैसे-वैसे इनके रूप भी बदलते रहते हैं। इन्हीं बदलते रूपों को गांव में रहने वाला रचनाकार समझ पाता है। इसीलिए ग्रामीण यथार्थ पर वही बात कर सकता है, जो उससे जुड़ा हो। एक उदाहरण देकर बात समझाना चाहूंगा कि, जिस प्रकार दलित जीवन का वास्तविक वर्णन दलित साहित्यकार ही कर सकता है ठीक उसी प्रकार ग्रामीण जीवन का वास्तविक वर्णन ग्रामीण साहित्यकार ही कर सकता है।

कहानी लिखने का दायरा असीमित है। यह किसी भी विषय को लेकर लिखी जा सकती है। ज्यादातर रचनाकार अपनी कहानियों में परिवार का वर्णन करते हैं। यह परिवार शहरी भी हो सकता है और ग्रामीण भी। यह लेखक के परिवेश पर निर्भर करता है। लेखक जिस परिवेश में रहता है उसी परिवेश के तत्त्व उसकी रचनाओं में आते हैं। इसीलिए महेश कटारे की कहानियों में ग्रामीण परिवेश आया है; क्योंकि वे ग्रामीण परिवेश में जीवन-यापन कर रहे हैं। इन्होंने अपनी ज्यादातर कहानियों का विषय ही ग्रामीण परिस्थिति को ध्यान में रखकर किया है। इनकी कहानियाँ ग्रामीण यथार्थ के परदे खोलती हैं। साधारण सरल भाषा में कहानी के पात्रों का आपसी संवाद और वह संवाद उनकी अपनी ग्रामीण भाषा में वही रचनाकार लिख सकता है, जो उनके बीच रहा हो।

सम्पूर्ण लघु शोध-प्रबन्ध में ये बात सामान्यतः देखी जाती है कि गांव का विकास किस सीमा तक हो चुका है। जहाँ गांवों में अंधविश्वास इतना गहरा लोगों में समा गया था कि उनका जीना मुश्किल हो गया था, वहीं अब के गांवों में आधुनिकतावादी सोंच विकसित हो चुकी है। अब ज्यादातर गांवों में उस तरह की परंपरा देखने को नहीं मिलती, जिसमें धर्म या जाति के नाम पर शोषण होता था। हाँ एक बात तो कहा ही जा सकता है कि कहीं-कहीं इसके अपवाद भी हैं, लेकिन वह दिन दूर नहीं जब गांव का व्यक्ति मानसिक रूप से अंधविश्वासों , दुष्प्रवृत्तियों आदि से मुक्त होगा; क्योंकि इन्हीं सब चीजों को दूर करने के लिए अब का कहानीकार सत्य घटना पर आधारित कहानियाँ लिखता है।

आधुनिक मानव बहुत समझदार हो गया है। अब वह परियों, देवताओं और राक्षसों की कहानियों को बकवास मानता है। दरअस्ल इस भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में इन सब चीज़ों को सोंचने का उसके पास समय ही नहीं है।

इसलिए आज के दौर में वही कहानी अपनी जगह बना पाती है, जो सत्य घटना पर आधारित होती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि पाठक घटना से रूबरू होना चाहता है।

आने वाले समय में गांव के सन्दर्भ में कहानी का भविष्य उज्ज्वल है; क्योंकि गांव बहुत कुछ बदल चुके हैं और बदल चुकीं है उनकी प्रवृत्तियाँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में मुख्यतः ग्रामीण चेतना पर विचार-विमर्श हुआ है।

(सहाब अली)

नामांकन संख्या : 2016/RCA/215/005

Research Summery

The story writes and reads in every languages of the world. Before the invention of write skill the story was only listening and story telling in custom way. How was the story development and what is the current face? The story that is main discussion point in this essay. In early time the story was based on only imagination but now days the story is based on reality. In current situation if the story have no real contents then there is no value.

In our country, the historical period of story was very old. At the beginning of human civilization the story telling and listening tradition was found. So, the

old Granth like Rigwed has some dialogue epic Urvashi etc. found naturally mythological term. After that there was different and several Upanishad, epic Puran, Jain and Buddha Literature was very famous in the world. The story was translated in different languages like Latin, Arabic, German, French, Spanish and English etc.

Modern stories was started in Europe in 19th century by several group of writer. First story collection was published in between 1814-1821. The writer name was E.T.W Halfman. In another side Jacob and Whilman translated the story Puran and Angel but that story have not own reality.

After sometime the development story art and literature in good way. In India, this story was translated in English and Bengali language in beginning of 20th century.

The research of the Subject is to study the deferent between old and modern era villages level. What will be deferent will come out at village. This is the main analysis in term story.

In the first phase of the essay the discussion on the beginning of story and development, perspective of story in this phase the analysis on stages of story and what is the situation across overall changes the story.

The second phase of the essay is mainly discuss of village society. The stories of great writer Munshi Premchand consist of village situation. He stated that the Social life Political, Economical, culture, perspective and overall situation of village people. He sketched all the picture of village people. But there is lot of differences in villages. In this phase the main analysis on the thinking of village people. It also discuss the different between the thinking of old people and current people of villages.

Third stage of this essay study about the story of Mahesh Katare. He discuss about the writer of story and what is the aim of story writer? They described the problem of farmer. Power of

Puanchayat Raj. They describe the beautiful girl and the farmer condition all exploitation by rich person of village people. Munsi Pramchand writes about the religious point of view at village level. In this phase, they also describe the festival of village and other traditional function.

In the fourth phase the discussion point is about the craft. The story of Mahesh Katre tells about the language character etc. For this he used idiom that make very interesting in the story. He also used the local language of village.

The truth of village can write only by those people who live in village and contribute in the

cultural, tradition customs and norms of the village. The changed in village is understand by the person. Who lives in village? For example the schedule caste condition describe only other backward cast and scheduled cast person and same as village condition writes by only village writer.

There is no boundation story. You can write story at any topic. Most of the story describe the family is either urban family or rural family. In the story of Mahesh Katare, the writes about the rural family.

Now a days the development of village at which level? Superstitious thinking mostly found in the

village and there face many problem but we current situation is different modern thinking has been develop in the village. To there superstitious, or any other type of custom which is many harmful forth society, story writer writes about the fact. Today's story is totally based on reality.

Modern human will never accept the story of Angel, Demons etc. They refused it. Because life is very fact. They have no time to listening the fiction story. Every person life has own story and that is totally truth.

In future, the villages stories or very brightful, because village has changed.

This essay is mainly discuss about the village situation.

Sahab Ali